प्रस्थिति का अर्थ एवं परिभाषाएँ
(Meaning and Definitions of Status)

समाज की संरचना व संगठन का निर्माण विभिन्न व्यक्तियों द्वारा प्राप्त की गयी प्रस्थितियों और भूमिकाओं के व्यवस्थित योग से होता है। टी॰ पारसन्स ने अपनी पुस्तक 'Essays in Sociological Theory' (एसेज इन सोशियोलॉजिकल थ्योरी) में सामाजिक संरचना के निर्माणक इकाइयों में प्रस्थिति और भूमिका का उल्लेख किया है।

प्रत्येक समाज चाहे वह सरल हो या जटिल, प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह खास हो या साधारण - उसे खास समय में कोई-न-कोई निश्चित पद या स्थान - निम्न हो या उच्च अवश्य मिलता है। इसे ही समाजशास्त्रीय भाषा में प्रस्थिति कहा जाता है। इसलिए तो आर॰ बीरस्टीड ने लिखा है:—"समाज सामाजिक परिस्थितियों का जाल है।"

आर॰ लिण्टन :—

"किसी व्यवस्था विशेष में किसी व्यक्ति विशेष को किसी समय विशेष में जो स्थान प्राप्त होता है, वही उस व्यवस्था के सन्दर्भ में उस व्यक्ति की प्रस्थिति कहलायेगी।"

इनकी परिभाषा से यह स्पष्ट होता है कि प्रस्थिति किसी व्यक्ति से जुड़ी होती है। साथ ही यह एक खास समय में एक व्यवस्था से जुड़ी होती है। इस प्रकार एक व्यक्ति की अनेक प्रस्थितियाँ हो सकती है। जितने समूहों से व्यक्ति का संबंध होता है, उतनी ही प्रस्थितियाँ उसके साथ होती है।

लिंटन एवं मेरिल :—

"प्रस्थिति व्यक्ति की वह

स्थिति है जिसे व्यक्ति किसी समूह में अपने लिंग, आयु, परिवार, वर्ग, व्यवसाय, विवाह और प्रयत्नों आदि के कारण प्राप्त करता है।"

इनकी परिभाषा से दो बातें स्पष्ट है — (1) प्रस्थिति एक खास पद है जिसे व्यक्ति खास समूह में प्राप्त करता है। (2) प्रस्थिति व्यक्ति को स्वतः ही प्राप्त हो सकती है, जैसे - आयु, लिंग एवं परिवार के द्वारा या व्यक्ति अपनी योग्यता द्वारा अर्जित कर सकता है।

मैकाइवर एवं पेज :—

"प्रस्थिति वह सामाजिक स्थिति या अवस्था है जिसमें जब कोई व्यक्ति होता है तो वह अपने व्यक्तिगत गुणों अथवा सामाजिक सेवा से पृथक सम्मान, प्रतिष्ठा और प्रभाव की एक मात्रा प्राप्त कर लेता है।"

मैकाइवर एवं पेज की परिभाषा से यह स्पष्ट होता है कि प्रस्थिति व्यक्ति से जुड़ी वह स्थिति है जिसे किसी विशेष व्यवस्था में व्यक्ति प्राप्त करता है। साथ ही प्रस्थिति के साथ सम्मान, प्रतिष्ठा व शक्ति की कुछ मात्रा सम्बद्ध होती है।

इस प्रकार उपरोक्त परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि प्रस्थिति अर्जित या प्रदत्त ऐसी स्थिति है जिसे किसी विशेष व्यवस्था में कोई व्यक्ति खास समय में प्राप्त करता है तथा जिसके साथ प्रतिष्ठा व शक्ति की मात्रा जुड़ी होती है।